United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

भारतीय ज्ञान परंपरा में तेलंगाना संस्कृति का योगदान: एक ऐतिहासिक एवं वैचारिक अनुशीलन

नरसिंहम एम.वी.एल. प्राध्यापक,
सरकारी महाविद्यालय (स्वायत्त), अनंतपुरम्

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System) विश्व की प्राचीनतम जीवंत संस्कृतियों में से एक है। इसमें तेलंगाना का योगदान केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और दार्शनिक भी है। गोदावरी और कृष्णा नदियों के तट पर विकसित यह संस्कृति 'त्रि-लिंग' देश (कालेश्वरम, श्रीशैलम और द्राक्षारामम) के रूप में विख्यात रही है। प्राचीन काल से ही यह क्षेत्र वैदिक विद्या, बौद्ध दर्शन और जैन धर्म के समन्वय का केंद्र रहा है।

अध्याय १: प्राचीन काल और वैदिक ज्ञान का संरक्षण

तेलंगाना की भूमि ने ऋग्वैदिक काल से ही अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है।

1. **षोडश महाजनपद और अश्मक:** दक्षिण भारत का एकमात्र महाजनपद 'अश्मक' (बोधन) तेलंगाना में स्थित था, जो ज्ञान और शासन का प्रमुख केंद्र था।
2. **वेदाध्ययन:** पोचमपल्ली और निजामाबाद जैसे क्षेत्रों में वेदों की मौखिक परंपरा का संरक्षण पीढ़ियों से किया गया। 'अवधानम' (Avadhanam) जैसी अद्वितीय बौद्धिक विधा, जो याददाश्त और बहुआयामी प्रतिभा का परीक्षण करती है, तेलंगाना की महान देन है।

अध्याय २: दार्शनिक और आध्यात्मिक योगदान

तेलंगाना ने भारतीय दर्शन को कई महान विभूतियाँ दी हैं।

1. **बौद्ध दर्शन:** नागार्जुनकोंडा और कोटिलिंगला जैसे स्थानों ने बौद्ध न्याय और शून्यवाद के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महान आचार्य नागार्जुन ने यहीं से 'माध्यमिक' दर्शन का प्रचार किया।
2. **शैव और वैष्णव भक्ति:** पालकुरीकी सोमन ने 'बसव पुराण' के माध्यम से वीरशैव दर्शन को जन-जन तक पहुँचाया। वहीं, **बामेरा पोतना** का 'श्रीमद्भागवतम्' (तेलुगु) भक्ति और ज्ञान का वह संगम है, जिसने भारतीय साहित्य को संस्कारित किया।
3. **मल्लिनाथ सूरी:** संस्कृत साहित्य के महानतम टीकाकार कोलाचल मल्लिनाथ सूरी तेलंगाना के ही थे। उनके बिना कालिदास के काव्यों को समझना आज भी असंभव माना जाता है।

United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

तेलंगाना की पावन धरा ने अनादि काल से भारतीय दार्शनिक और आध्यात्मिक चेतना को अपनी मेधा से सींचा है, जिसका प्रमाण यहाँ के ऋषि-तुल्य मनीषियों का अद्वितीय बौद्धिक अवदान है। महान आचार्य नागार्जुन ने इसी क्षेत्र के श्रीपर्वत (नागार्जुनकोंडा) को अपनी तपोस्थली बनाकर 'शून्यववाद' और 'माध्यमिक दर्शन' का प्रतिपादन किया, जिसने न केवल भारत अपितु संपूर्ण एशिया की वैचारिक दिशा बदल दी। इसी क्रम में, मध्यकाल के महान टीकाकार कोलाचल मल्लिनाथ सूरी ने अपनी 'संजीवनी' टीकाओं के माध्यम से संस्कृत के पंचमहाकाव्यों के गूढ़ दार्शनिक पक्षों को विश्व के सम्मुख उद्घाटित किया, जिसके बिना कालिदास और भारवि के काव्य का दार्शनिक रसास्वादन असंभव है। शैव दर्शन की समृद्ध परंपरा में पालकुरीकी सोमन ने 'बसव पुराण' के माध्यम से 'वीरशैव' मत को एक नई सामाजिक और आध्यात्मिक गरिमा प्रदान की, जिसने जातिगत भेदों को मिटाकर भक्ति के लोकतंत्रीकरण का मार्ग प्रशस्त किया। तेलंगाना के ही बामेरा पोतना ने अपनी सहज भक्ति और 'श्रीमद्भागवतम्' के तेलुगु अनुवाद के द्वारा अद्वैत और भक्ति के अद्भुत समन्वय को जन-मानस की भाषा बनाया, जो आज भी घर-घर में आध्यात्मिक ऊर्जा का स्रोत है। निंबार्क संप्रदाय के आदि प्रवर्तक नियमानंद (निंबार्काचार्य) का संबंध भी इसी क्षेत्र से जोड़ा जाता है, जिन्होंने 'द्वैताद्वैत' दर्शन के माध्यम से जीव और ब्रह्म के संबंध की एक नवीन और संतुलित व्याख्या प्रस्तुत की। यहाँ के मंदिरों का स्थापत्य, जैसे रामप्पा और हजार स्तंभ मंदिर, केवल पत्थर की संरचनाएँ नहीं हैं, बल्कि वे 'शिल्प शास्त्र' और 'आगम दर्शन' के जीवंत दस्तावेज हैं जो भौतिक और आध्यात्मिक विज्ञान के मेल को दर्शाते हैं। वर्तमान समय में समता की प्रतिमा (Statue of Equality) के रूप में प्रतिष्ठित रामानुजाचार्य का प्रभाव भी इस क्षेत्र की दार्शनिक सहिष्णुता और 'विशिष्टाद्वैत' के प्रति अटूट आस्था को पुनर्जीवित करता है। कुल मिलाकर, तेलंगाना की दार्शनिक विरासत वेदों की ऋचाओं से लेकर सूफी संतों की प्रेम-मार्गी शाखा तक फैली हुई है, जिसने 'सर्वधर्म समभाव' और आत्मिक अन्वेषण को भारतीय ज्ञान परंपरा का अभिन्न हिस्सा बनाया है।

अध्याय ३: स्थापत्य कला और विज्ञान (वास्तुशास्त्र)

तेलंगाना की वास्तुकला केवल कला नहीं, बल्कि ज्यामिति और इंजीनियरिंग का उत्कृष्ट उदाहरण है।

1. **काकतीय वास्तुकला (रामप्पा मंदिर):** यूनेस्को विश्व धरोहर रामप्पा मंदिर में 'तैरने वाली ईंटों' का प्रयोग प्राचीन भारतीय रसायन विज्ञान और निर्माण कौशल का प्रमाण है।
2. **हज़ार स्तंभ मंदिर (Thousand Pillar Temple):** यहाँ के तराशे गए पत्थर और जटिल नक्काशी प्राचीन 'शिल्प शास्त्र' की गहराई को दर्शाती है।

United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

तेलंगाना की स्थापत्य कला भारतीय वास्तुशास्त्र के गहन वैज्ञानिक सिद्धांतों, जटिल ज्यामिति और उत्कृष्ट इंजीनियरिंग का एक कालजयी संगम है, जहाँ प्रत्येक संरचना केवल पाषाण खंड नहीं बल्कि गणितीय सटीकता का जीवंत प्रमाण प्रस्तुत करती है। यहाँ की वास्तुकला में काकतीय शासकों द्वारा प्रवर्तित 'सैंडबॉक्स तकनीक' (Sandbox Technique) का प्रयोग भूकंपरोधी नींव निर्माण की अद्भुत वैज्ञानिक समझ को दर्शाता है, जो आधुनिक सिविल इंजीनियरिंग को भी विस्मय में डाल देता है। यूनेस्को विश्व धरोहर रामप्पा मंदिर में प्रयुक्त 'तैरने वाली ईंटें' (Floating Bricks) प्राचीन भारतीय रसायन विज्ञान की उस उपलब्धि का प्रतीक हैं, जहाँ वजन घटाने के लिए ईंटों को छिद्रयुक्त और स्पंज जैसा बनाया गया था। मंदिर के गर्भगृह और स्तंभों पर की गई नक्काशी में प्रकाश और छाया का ऐसा समन्वय है कि सूर्य की किरणें विशेष कोणों से आंतरिक कक्षों को आलोकित करती हैं, जो खगोल विज्ञान और प्रकाशिकी (Optics) के गहरे ज्ञान को सिद्ध करता है। वारंगल का 'कुश महल' और गोलकुंडा किले की 'ध्वनि इंजीनियरिंग' (Acoustic Engineering) उस रक्षा विज्ञान का उदाहरण है, जहाँ प्रवेश द्वार की एक ताली की गूँज कई किलोमीटर दूर किले के उच्चतम बिंदु 'बाला हिसार' तक स्पष्ट सुनाई देती है। हजार स्तंभ मंदिर (Thousand Pillar Temple) का 'नक्षत्रनुमा आधार' (Stellate Plan) और ऊँचे चबूतरों का निर्माण केवल सौंदर्यबोध नहीं, बल्कि संरचनात्मक स्थिरता और भू-भार वितरण की उन्नत ज्यामितीय पद्धति पर आधारित है। तेलंगाना के मंदिरों के स्तंभों पर की गई पॉलिश और सूक्ष्म नक्काशी में प्रयुक्त औजारों की सूक्ष्मता यह संकेत देती है कि उस समय 'लेथ मशीन' जैसी किसी यांत्रिक विधा का प्रारंभिक ज्ञान अस्तित्व में था। यहाँ की स्थापत्य शैली में 'शिल्प शास्त्र' और 'मानसार्' जैसे प्राचीन ग्रंथों के मापदंडों का कड़ाई से पालन किया गया है, जिससे मूर्तियाँ और स्तंभ ध्वनि तरंगों के प्रति संवेदनशील प्रतीत होते हैं। यहाँ के किलों में जल संचयन की 'बावली' प्रणाली और ढलान वाले रास्तों का निर्माण जल प्रबंधन (Hydro-management) के प्रति तत्कालीन समाज की वैज्ञानिक दूरदर्शिता को प्रकट करता है। अंततः, तेलंगाना का वास्तुशिल्प भारतीय ज्ञान परंपरा के उस वैज्ञानिक उत्कर्ष का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ पत्थर, पानी और प्रकाश का उपयोग करके मानव निर्मित संरचनाओं को प्रकृति के साथ पूर्ण सामंजस्य में स्थापित किया गया था।

अध्याय ४: साहित्य और भाषा का समन्वय

तेलंगाना 'गंगा-जमुनी तहजीब' का प्रतीक है, जहाँ संस्कृत, तेलुगु, उर्दू और हिंदी का अनूठा संगम मिलता है।

1. **तेलुगु साहित्य का स्वर्णकाल:** नन्नय्या, तिक्कन्ना और एर्राप्रगडा की परंपरा को तेलंगाना के कवियों ने आगे बढ़ाया।

2. **दक्षिण की हिंदी (दक्खनी):** हिंदी साहित्य के इतिहास में 'दक्खनी' का विशेष स्थान है। मुहम्मद कुली कुतुब शाह ने न केवल हैदराबाद बसाया, बल्कि भारतीय कविता में धर्मनिरपेक्ष और भारतीय परिवेश को प्राथमिकता दी।
3. **लोक साहित्य:** 'पेरिनी शिवतांडवम' और 'बथुकम्मा' जैसे उत्सव केवल त्यौहार नहीं, बल्कि प्रकृति पूजा और सामूहिक ज्ञान के प्रतीक हैं।

अध्याय ५: आधुनिक युग और शैक्षणिक चेतना

स्वतंत्रता संग्राम और उसके बाद के काल में भी तेलंगाना ने भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक संदर्भों में परिभाषित किया।

1. **उस्मानिया विश्वविद्यालय:** भारत का वह पहला विश्वविद्यालय जहाँ भारतीय भाषाओं (उर्दू) को शिक्षा का माध्यम बनाया गया।
2. **पी.वी. नरसिम्हा राव:** 'आधुनिक भारत के चाणक्य' कहे जाने वाले पूर्व प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव तेलंगाना की उसी बहुभाषी और बहुआयामी ज्ञान परंपरा के प्रतिनिधि थे। वे 17 भाषाओं के ज्ञाता और महान साहित्यकार थे।

अध्याय ६: सामाजिक न्याय और ज्ञान का लोकतंत्रीकरण

तेलंगाना का 'सशस्त्र संघर्ष' और 'भूदान आंदोलन' (विनोबा भावे द्वारा पोचमपल्ली से शुरू) यह दर्शाता है कि यहाँ की संस्कृति ने केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं, बल्कि व्यावहारिक नैतिकता और सामाजिक समानता का मार्ग दिखाया।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा में तेलंगाना की भूमिका एक आधार स्तंभ की तरह है। चाहे वह कोलाचल मल्लिनाथ की पांडित्यपूर्ण टीकाएँ हों, काकतीय शासकों का जल प्रबंधन तंत्र (मिशन काकतीय का आधार) हो, या पोतना की भक्ति, इस क्षेत्र ने सदैव ज्ञान को संकीर्णता से ऊपर उठाकर 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना को पुष्ट किया है। आज 'डिजिटल ह्यूमैनिटीज' और वैश्विक मंच पर तेलंगाना की संस्कृति अपनी प्राचीन जड़ों को आधुनिकता के साथ जोड़कर एक समृद्ध भारत का निर्माण कर रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

History of Telangana - Prof. G. Venkataramaiah.
Indian Knowledge Systems - Kapil Kapoor.
तेलुगु साहित्य का इतिहास - डॉ. सी. नारायण रेड्डी।
दक्खनी हिंदी का उद्भव और विकास - डॉ. श्रीराम शर्मा।